



*Season's Greetings*

**The Becoming :**

The outpouring of energy - The self projecting of Brahman into conditions of time and space.  
Creation is not a making. But "A Becoming" of the Supreme Eternal - The Imperishable - Highest Truth  
In the everchanging countless external forms and all that is apparent - It is for the Seeker to discern the underlying One Reality....

न च मत्स्थानि भूतानि; पश्य मे योगमैश्वरम्,  
भूतभृन् च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः ॥ BG IX. 5

Nor have beings root in Me; behold my Sovereign Yoga! The Support of all  
beings, yet not rooted in Beings, My Self their efficient cause.

Courtesy : S.H. RAZA  
© S.H. RAZA

**Educate a child....**



"उद्धरेदात्मनात्मानं"

Rise Yourself By Yourself

परम्परा

**Paramparā**

38, Kasturi Ranga Road,  
Madras - 600 018.  
Phone : 4991516





मैं किसी भी रचना के पीछे की विचार-प्रक्रिया के महत्व को नहीं नकारता। बहुत विचार करना पड़ता है, लेकिन सिर्फ विचार से काम नहीं बनता। देखनक और मायम पर पड़ने का काम नहीं आती। मेरा दृढ़ विश्वास है कि साधना और एकाग्रता अपरिहार्य हैं। चित्रकारी सिर्फ चित्रा-प्रक्रिया के द्वारा ही नहीं होती, चित्रकारी के लिए एकाग्रता बहुत जरूरी है। रचना से तादात्म्य बहुत जरूरी है, लेकिन तनाव का एक मुकाम ऐसा आता है, जब विचार-प्रक्रिया भीमी हो जाती है और सबज्युट हावी हो जाती है। ■ सैयद हैदरजा

■ सैयद हैदर रजा

[illegible]

विशेष रूप से 1948 में  
और फिर बाद में फ्रांस में,

क्र.सं.	लघुसंकेत
1	1
2	2
3	3
4	4
5	5
6	6
7	7
8	8
9	9
10	10
11	11
12	12
13	13
14	14
15	15
16	16
17	17
18	18
19	19
20	20
21	21
22	22
23	23
24	24
25	25
26	26
27	27
28	28
29	29
30	30
31	31
32	32
33	33
34	34
35	35
36	36
37	37
38	38
39	39
40	40
41	41
42	42
43	43
44	44
45	45
46	46
47	47
48	48
49	49
50	50
51	51
52	52
53	53
54	54
55	55
56	56
57	57
58	58
59	59
60	60
61	61
62	62
63	63
64	64
65	65
66	66
67	67
68	68
69	69
70	70
71	71
72	72
73	73
74	74
75	75
76	76
77	77
78	78
79	79
80	80
81	81
82	82
83	83
84	84
85	85
86	86
87	87
88	88
89	89
90	90
91	91
92	92
93	93
94	94
95	95
96	96
97	97
98	98
99	99
100	100

पानी के चित्र बनाए, लेकिन ये आंख से दिखने वाली नदी या धारा के चित्र नहीं थे। जल पर्वत और पृथ्वी की अवधारणा अधिक महत्वपूर्ण होगी।

प्रेम व आस्था बहत निजी है

दृष्टिपूर्व से दोनों ही प्रकृति नहीं, बल्कि प्रकृति। हम लोगों में अनुभावना एक भाव प्रीति है। हमारी चिन्ता इससे सुनिश्चित है, वे जानती हैं कि क्या दिखाना है और क्या छिपाना है। मैं समझता हूँ कि यह अनमोल है। यहाँ यूरोप में तो सब दिखावा है। हम लोग अक्सर कहते हैं कि यहाँ हम आते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि बिना दिखावा के सफाई है, उनका ही दिखाने का संसार आवश्यक है। जहाँ चीनों को यहाँ तक कि पौष्टिक चिन्ता के बारे में ऐसा माना है कि यह तब तक सही है जो वे ऐसा मानते हैं। हाँ, आप टास्कीयों में तब कर सकते हैं। आप एक ठक उन्नीसवीं शताब्दी को प्रकाश कर सकते हैं और अक्सर विचारों और विचारों को प्रकाश कर सकते हैं।

लिख सकते हैं:-

प्रेम में देवकृपा की तरह उदार और अकस्मात्  
प्रेम में वादान की तरह एकत्र

कवि री राह लिख सकता है। परे जैसे सापाल लोग, चित्रकार नहीं है। अगर चित्र ऐसा है, जिसके लगे कोई वाकिक अभिव्यक्ति चाहिए होती है। अमेरिका, इंग्लैंड, यूरोप की री राह प्रांतों में भी हम ऐसे ऐसे समय में रहे हैं, जहाँ राह कुछ बदलती है, दिखाना आ रहा है। प्रकृत किया आ रहा है, वहाँ री राह है। कल्पना के बिना कुछ भी नहीं छोड़ा गया है। अगर यहाँ कुछ दुखी करता है। चित्रकारों में प्रेम और प्रेम प्रसंगों को चुनता है। चित्रकार और साहित्य में और फिन्नायें तथा संसार मायाओं में भी, मुझे राहना है। निरवधार्य और वस्तु के लिए यह कोई बहुत अच्छी बात नहीं है। ■■■

100

प्रसिद्ध भारतीय चित्रकार सैयद हैदर रज़ा के यह विचार प्रसिद्ध कवि, लेखक व आलोचक अशोक वाजपेयी से बातचीत पर आधारित किताब 'आत्मा का ताप' का एक हिस्सा है।

कला देवताओं की चर्चाई में है

एक महान शिल्पी ने अपनी रचना को देखा, जिस पर उसने महीने, शायद दोस्तों लगातार काम किया था। और हैन होकर उसने सोचा— 'यही किस्म का क्या है?' नहीं, यह तो अकस्मात आया। उसमें जगमगाते कि यह अकस्मात नहीं होता, यह तो दैवी कला है। भारतीय शास्त्रीय नृत्य में ऐसा माना जाता है कि कला देवताओं को बुझाई गई है, अपना। मैं कह नहीं सकता कि यह नहीं, लेकिन कई बरसों से मेरा यह अनुभव रहा है और मैं मानसुर करता हूँ कि यह बहुत प्राचीन अनुभव जल्द ही तो रची जा सकता है और, जिसके लिए बहुत जड़ों सेहान और पिपादा जड़ों की, रहस्यमय स्तरों से आती है, जिनका विश्लेषण लक्षणम उसपर है।

**एक विचित्र उन्माद है  
इसे विश्वास से सहेजना है**

अनुभव इसका प्रमाण है। कभी-कभी ऐसा होता है कि आपके सामने एक खाली जगह भर होती है और ऐसा लगातार कई दिन तक चलता है। आपको बोध नहीं हो रहा, आप उसे देख ही नहीं पा रहे।

देवी राक्षसियों में विश्वास

आंतरिक दृष्टि विकसित नहीं हो रही, वह मौजूद तक नहीं है। भरा पूरा विश्वास है कि देवी शक्तियों का सहयोग न हो तो आप कला का सूत्र नहीं कर सकते। दशअवल चित्रकारी में नहीं करता। एक कलाकार के लिए देवी शक्तियों का सहयोग बहुत जरूरी है। एक उदाहरण देता हूँ। हाल ही में एक चित्र पर काम कर रहा था- सूर्य नमस्कार। मैंने काम से कम पांच-छह हफ्ते उस पर काम किया। यह टीक-टाक आकार की

रा विश्वास प्राधान्य में है। मैं मानता हूँ कि भोरे लिए प्राधान्य महत्वपूर्ण है। भोरे जीवन और भोरे काम में दबके बोरे में बात करना बहुत कठिन है। आप यह कैसे बता पायें कि प्राधान्य में, नीति के श्रवणों में और आनंद तथा आध्यात्मिक पीढ़ के श्रवणों में आप कैसा महसूस करते हैं ? मैं अनुभव करता हूँ कि भोरे लिए यह संवाद महत्वपूर्ण है। क्योंकि ये किन्तनी संवाद बना करी है।

दुःख में सुगिरन साथ करे सुख में करे न कोय ।  
जो सुख में सुगिरन करे दुःख काहे को होय ।

सबसे आसानी से संतुष्ट होता है यह अस्वच्छ जल।  
शक्तिवश से संतुष्ट होता है यह बुध्दामय पदार्थ।  
धर्म पर मितावली पावनी सस्य मय पदार्थ।  
हर्मि दानके सत्य नालक पदार्थ अस्वाच्छ जल।  
बत न्याय। कभी-कभी मायास भक्तमय, कभी हमाय  
ध्यान न टिकाय, लेकिन पितावली उस पर ओर दो।  
बतके हिते निमाग हसनाय कभी बहुत बुरी चीजों में से  
होते है। अस्वाच्छ अस्वच्छ भूल जल।  
आमा आज में होते है या मुझे ऐसा लगता है कि  
आप में गहन बुरा से होती है तो लगना बीजधर ही  
मुझ ओर कुछ मैं पाया कभी मुझ ओर तो नहीं यहाँ  
कुछ कुछ मैं पाया कभी मुझ ओर तो नहीं यहाँ  
लेकिन पावना मेरे योगमा की जीवन में लगाना छिदित  
होयें कुछ मैं पावना नहीं है। कुछ ही बगल होयें है।  
कभी कभी पाव, कभी कुछ ही नहीं। इससे  
आसानीय पाव की पाविस होती है।

एकाग्रता जरूरी है

मैं किसी भी रचना के पछे कोई विचार-प्रक्रिया के मूलतः को नहीं करता। बहुत विचार काम पड़ता है, लेकिन सिर्फ एक काम नहीं आती। मेरा दुर्ग विश्वास है, माध्यम पर एक काम नहीं आती। मेरा दुर्ग विश्वास है कि मानना और एकपक्षता अपरिहार्य है। विचकारी सिर्फ विचार-प्रक्रिया के द्वारा ही नहीं होती, तबकारी के लिए एकपक्षता बहुत जरूरी है। रचना से विचार बहुत बनती है, लेकिन तबला एक एक मुकाम ऐसा बनता है जब विचार-प्रक्रिया धीमी हो जाती है और महसूस हो जाती है। जब हावी होती है तो ज़िंदगी